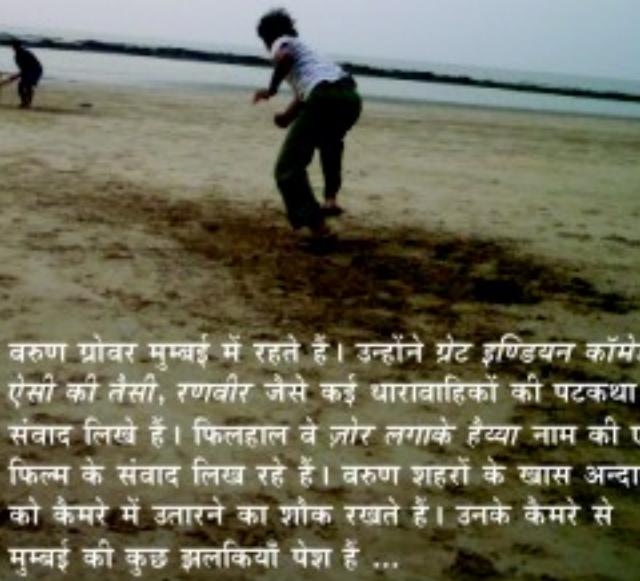


वरुण ई है
मुम्बई
जगहिया



वरुण ग्रोवर मुम्बई में रहते हैं। उन्होंने ग्रेट इण्डियन कॉमेडी, ऐसी की तैसी, रणबीर जैसे कई धारावाहिकों की पटकथा व संवाद लिखे हैं। फिल्माल वे ज्ञात लगाके हैव्या नाम की एक फिल्म के संवाद लिख रहे हैं। वरुण शहरों के खास अन्दाज को कैमरे में उतारने का शाक रखते हैं। उनके कैमरे से मुम्बई की कुछ झलकियाँ पेश हैं ...



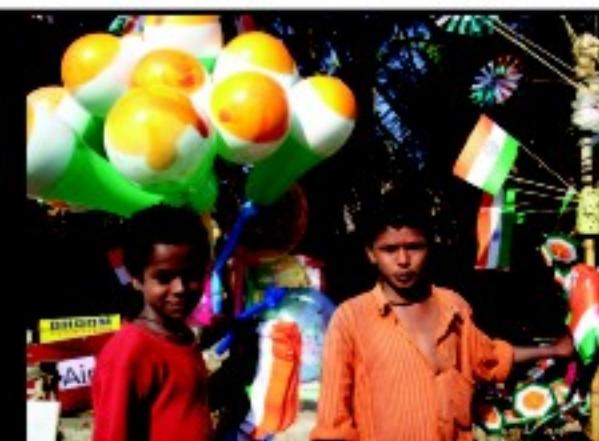
दुकानदार सोया, खिलौनों का पहरा



शीर्षक



सड़क बनी ताल,
उसपे बालीबॉल!



बक्का लंबे का कपड़ा, कमी गुब्बारा कभी इन्हाँ



शीर्षक



जरा सेंधल के ... न बॉल छूबे, न सूरज!



मुम्बई में फैशन स्ट्रीट पर
गोपाल कृष्ण गोखले का स्मारक



शीर्षक



अमिताभ बच्चन के घर के सामने उनके "दर्शन" करने उमड़ी भीड़

शीर्षक लिखो, इनाम पाओ।

यहाँ तीन ऐसी फोटो हैं जिनका कोई शीर्षक नहीं है। क्या तुम्हें इनका कोई चटपटा शीर्षक सूझ रहा है?



रेडियो की आवाज़ कंची कर
ताकि नीचे तक सुनाई दे।



भीड़ों के बस रेले यहाँ, बोलो कोई खेले कहाँ

मुम्बई गीत

सुनो रे मैया लाल-बुझक्कड़,
शहर ये कैसा अक्कड़-बक्कड़...
चलता जाए-चलता जाए,
इसके पाँव हमेशा चक्कर...
“बोले तो, मामू” भाषा ऐसी,
हर मुश्किल में आशा ऐसी,
टेशन नक्को लेने का रे,
भले लाइफ भी मारे टक्कर!
सुनो रे मैया लाल-बुझक्कड़...
रंग बहुत हैं, ढंग बहुत हैं,
मुम्बई के परसंग बहुत है...
एक है किस्सा आम-आदमी,
जिसके साथ न सदा चाँदनी,
पर उसके भी हिस्से का है,
नमक समन्दर हवा की शक्कर!
सुनो रे मैया लाल-बुझक्कड़...
और मुम्बई की मरती देखो,
बड़ी-बड़ी सब हरती देखो,
पर उनसे भी बड़ा शहर है,
बड़ी प्यास है, बड़ी लहर है,
प्यास लगे तो सब इक जैसे,
क्या राजा, क्या पीर, क्या फक्कड़...
सुनो रे मैया लाल-बुझक्कड़...
वरुण ग्रोवर